Raj Express (Indore), 22nd May 2025, Page-04

आईआईटी इंदौर में शिक्षकों के 288 पदों पर 212 ही, 76 पद हैं रिक्त

शहर के तमाम तकनीकी संस्थानों में शिक्षकों का अभाव, छात्रों की परेशानी का कारण बना

शिक्षक-छात्र अनुपात भी मात्र 1:10 का

● इंदौर/ पीयूष मौर्य

तकनीकी शिक्षा की ख्वाहिश पर शिक्षकों की कमी भारी पड़ रही है। शहर के तमाम तकनीकी संस्थानों में शिक्षकों का अभाव है। वहीं आईआईटी इंदौर में शिक्षकों के कुल 288 पद हैं। इसमें 212 पदों पर ही शिक्षक मौजूद है। मतलब 76 शिक्षकों का पद रिक्त है। वहीं शिक्षक-छात्र अनुपात की बात करें तो 1: 10 का है। जबकि गलाकाट प्रतिस्पर्धा वाली प्रवेश परीक्षा (जेईई) में कामयाब होने के बाद देश के प्रमुख आईआईटी में एडमिशन लेने का सपना लाखों छात्र देखते हैं। ऐसे चुनिंदा छात्र ही होते हैं जो जेईई एडवांस पास करके आईआईटी में पढ़ पाते हैं।

शिक्षकों की कमी से हो सकता है छात्रों को नुकसानः इंदौर सहित देशभर के तमाम आईआईटी में एडमिशन जेईई एडवांस के आधार पर दिया जाता है। ऐसे में छात्रों का दिल तब दुखता है जब उन्हें पता चला है कि देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में भी शिक्षकों का अभाव है। आमतौर पर स्कूल और राजकीय महाविद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों का मुद्दा उठता रहता है। इसके बाद भी शिक्षकों की कमी बनी रहती है। बहुत से इंजीनियरिंग महाविद्यालयों में अच्छी फैक्ल्टी की कमी आज भी है। इतना ही नहीं इंदौर सहित देश में करीब 23 आईआईटी संस्थान हैं, जिनमें कई जगह शिक्षकों का अभाव है। शिक्षाविदों का कहना हैं उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की कमी से विद्यार्थियों को कई तरह से नुकसान हो सकता है, जैसे कि व्यक्तिगत ध्यान कम मिलना, बेहतर शिक्षण सामग्री का अभाव। शिक्षकों की कमी से छात्र-शिक्षक अनुपात बढ़ जाता है, जिससे छात्रों को व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन और सहायता प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है। साथ ही उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री और संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाते, जिससे कई तरह की परेशानी हो सकती है।

गुणवत्ता शिक्षा के स्तर में कमी

शैक्षणिक संस्थानों में भर्ती की जो प्रोसेस है वह धीमी है। कई बार जिस योग्यता के शिक्षक चाहिए वह नहीं मिल पाते। नियुक्ति में दिक्कत होती है। जबकि सर्वोच्च प्राथमिकता से पद भरे जाना चाहिए। यदि संस्थानों में शिक्षकों की संख्या कम है तो इससे गुणवत्ता शिक्षा के स्तर में कमी आएगी।

■ **डॉ. जयंतीलाल भंडारी,** शिक्षाविद्

खाली पदों को भरने का प्रयास

आईआईटी इंदौर में शिक्षकों के कुल 288 पद है। इसमें 212 पदों पर शिक्षक मौजूद है। वहीं शिक्षक-छात्र अनुपात की बात करें तो 1: 10 का है। खाली पदों को भरने के लिए एक रोलिंग एडवरटाइजमेंट व दो रिक्रूटमेंट ड्राइव आयोजित किए गए।

■ **प्रो. सुनील कुमार,** पीआरओ, आईआईटी इंदौर

डिमांड और सप्लाई का गैप

शिक्षाविदों का मानना हैं उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की बड़ी संख्या में रिक्त पदों के पीछे का कारण डिमांड और सप्लाई का गैप नजर आता हैं। नए संस्थान तो खुलते जा रहे हैं, लेकिन अच्छी फैकल्टी कहां से आएगी इस ओर से अभी तक किसी ने ध्यान नहीं दिया। आईआईटी में इंजीनियरिंग के अलावा बहुत से पाठ्यक्रम पढ़ाए आते हैं। कई विषयों में पीजी की डिग्री दी जाती है और शोध पाठ्यक्रमों में भी बहुत छात्र पढ़ते हैं। इस कारण इन संस्थानों में शिक्षकों के काफी पद हैं। इनमें काफी पद हर साल रिक्त हो जाते हैं।

शिक्षण क्षेत्र में जाने की रुचि कम

सूत्रों की माने तो सवाल बहुत बड़ा है कि आखिर आईआईटी जैसे संस्थानों में भी शिक्षकों की कमी क्यों है वहीं सच्चाई यह भी है कि पिछले कई वर्षों में छात्रों में शिक्षण के क्षेत्र में जाने की रुचि कम हुई है। छात्रों को रुझाने के लिए मेधावी छात्रों को पीएचडी कार्यक्रमों की ओर आकर्षित किया जा रहा। पीएम रिसर्च फेलोशिप नाम की एक योजना शुरू की गई। इससे रिसर्च की गुणवत्ता में सुधार होने के साथ ही आईआईटी जैसे सभी उच्च शिक्षण संस्थानों की फैकेल्टी की कमी भी दूर होने का अनुमान लगाया जा रहा है।